https://www.echetana.com/Vol.-10, No.-02, April-June 2025, pp. 66-69

CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2025 - 8.445

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

एस.आर.हरनोट के कहानी संग्रह ‘दारोश तथा अन्य कहानियों’ में सामाजिक जीवन

गुरप्रीत कौर
शोधार्थी
हिंदी विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
Email :guridhillon33g@gmail.com, Mobile-08005898512

……………………………………………………………………….

First draft received: 18.04.2025, Reviewed: 22.04.2025
Final proof received: 25.05.2025, Accepted: 18.06.2025

शोध-सारांश

व्यक्ति के जीवन में समाज और सामाजिक संस्थाओं की महती भूमिका होती है। समाज में रहकर और सामाजिक संस्थाओं द्वारा व्यक्तित्व निर्माण का कार्य संपन्न होता है। इसलिए मानवीय जीवन में समाज को सर्वोपरि माना जाता है। साहित्यकार समाज की इस प्रक्रिया को बहुत सूक्ष्मता से महसूस करता है और अपनी रचनाओं में पात्रों द्वारा सामाजिक जीवन का चित्रण करता है। लेखक की दृष्टि समाज के सभी पक्षों को चित्रित करने की होती है, जिसके आधार पर शोध द्वारा इसके विविध पक्षों का विश्लेषण किया जाता है। समकालीन हिंदी के कहानीकारों में एस. आर. हरनोट विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। हरनोट की रचनाओं में सामाजिक जीवन की न केवल झलक देखने को मिलती है अपितु उनका सम्पूर्ण साहित्य ही सामाजिक जीवन को प्रस्तुत करता है। उनकी कोई भी कहानी ऐसी नहीं है जिसमें सामाजिक जीवन के दर्शन न होते हों। उन्होंने किसी वर्गगत भेदभाव के बिना सामाजिक जीवन का चित्रण किया है। उन्होंने अपने जीवन में अभाव और संघर्ष देखे हैं, वही अभाव एवं संघर्ष उन्होंने अपनी कहानियों में प्रस्तुत किए हैं। हरनोट की कहानियां सहानुभूति के साथ-साथ स्वानुभूति से भी परिपूर्ण हैं। इनकी कहानियों में दलित चिंतन, स्त्री समस्याएं, पर्यावरण तथा आदिवासी पहलुओं को चित्रित किया गया है। हिमाचल प्रदेश की संस्कृति को दिखाने के साथ-साथ, उस संस्कृति के लोगों विशेषकर निम्न वर्ग, दलित और स्त्रियों की समस्याओं को बखूबी प्रस्तुत किया है। हाशिए पर खड़ी श्रेणी की बात जब वे करते हैं, तो पात्र इतनी संजीदगी से प्रस्तुति देते हैं मानो वे दृश्य हमारी ही आँखों के सामने घटित हो रहा है। समाज के लोगों का रहन-सहन, अंधविश्वास, रीति-रिवाज आदि पर कहानीकार ने अपनी लेखनी चलाई है। किसी विशिष्ट व्यक्ति का जीवन न लिखकर हरनोट ने बच्चे से लेकर बुजुर्ग, स्त्री से लेकर पुरुष, साधारण जनता से लेकर राजनीतिक वर्ग, गाँव से लेकर शहर, पढ़े-लिखे लोगों से लेकर अनपढ़, अमीर से लेकर गरीब, धर्म से लेकर अंधविश्वास, पेशे से लेकर जाति तक के हर प्रकार के सामाजिक जीवन को अपनी कहानियों में आकार दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में एस.आर.हरनोट के कहानी संग्रह ‘दारोश तथा अन्य कहानियां’ में सामाजिक जीवन को विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द : *समाजपहाड़ी संस्कृति, स्त्री, दलित, सामाजिक जीवन, आदि.*

प्रस्तावना

साहित्य में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के साथसाथ - समाज ।जीवन का बहुआयामी चित्रण देखने को मिलता है सामाजिक सक्रिय ,केवल व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं होता अपितु ऐसा सजग और मूल्यवानसमूह होता है, जिसमें रहने वाले लोगों के नियम, संस्कृति, मूल्य, विश्वास, मान्यताएं, खानपान-, रीति रिवाज सांझे-होते हैं और जो इन्हीं आधारों पर एक दूसरे के साथ जुड़े-रहते हैं। समाज एक ऐसा संगठन होता है जो आपसी संवाद, सहयोग और सांझे संघर्ष के कारण उत्पन्न होता है। समाज को परिभाषित करते हुए डॉ नगेन्द्र लिखते हैं**समाज से अभिप्राय स"ामुदायिक जीवन की ऐसी अनवरत एवं नियामक अवस्था हैव्यक्ति जिसका निर्माण , अनजाने कर लेते-पारस्परिक हित तथा सुरक्षा के निमित जाने [1]"हैं।**समाज कभी भी स्थिर अथवा एक समान नहीं रहता। समय के साथ इसमें परिवर्तन होता रहता है। हर समाज का अपना एक अनुशासन होता है। उस अनुशासन को लागू करने के अपने ढंग होते हैं। समाज के पास यह शक्ति होती है कि उस समाज का व्यक्ति यदि बनाए गए सामाजिक नियमों में से किसी नियम का उल्लंघन करता है तो समाज उसे दण्डित कर सके। समाज का वर्गीकरण कई आधारों पर होता है जिसमें शामिल है-पढ़ा ,आधुनिक समाज ,प्राचीन समाज - खुला समाज। समाज के ,बंद समाज ,अनपढ़ समाज ,लिखा समाज ,लिंग ,अर्थ ,जाति ,पेशा ,धर्म ,विवाह ,परिवार -कई प्रकार के आयाम हैं राजनीति आदि। ,इतिहास ,मनोविज्ञान ,भूगोल ,वर्ग ,शिक्षा ,संस्कृति भारतीय समाज के ढांचे का निर्माण भूगोल ,धर्म ,सांस्कृतिक प्रवृतियों , सामाजिक रस्मों आदि से मिलकर हुआ है। इन ,भाषा ,कबीले ,जाति सब पक्षों में भारतीय समाज नजर आता है। भारतीय समाज कोअनेक तत्त्वों ने प्रभावित किया है। धार्मिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत में अनेक धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं लेकिन इसके बावजूद भारत एक धर्म निरपेक्ष देश है। यहाँ की पारिवारिक व्यवस्था आज भी पितृसत्तात्मक है। सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय समाज का अपना पहरावासंगीत हैं ,नृत्य ,रिवाज-रीति ,त्योहार ,मेले ,पीन-अपना खान , जो भारतीय समाज कोविशिष्टता प्रदान करता है। सामाजिक संस्था के अंतर्गत परिवार समाज की एक इकाई होती है। यह संबंधों की एक व्यवस्था और कार्यशाला कहलाती है जहाँ व्यक्ति अपने जीवन को जीने की शैली सीखता है। परिवार वास्तव में ऐसी महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था होती है, जिसमें रहने वाले लोगों द्वारा की जाने वाली कोई भी गतिविधियां पूरे परिवार को प्रभावित करती है। परिवार के सदस्य इस कदर आपस में जुड़े होते हैं कि परिवार के एक व्यक्ति की प्रशंसा या निंदा सिर्फ उसी व्यक्ति की नहीं होती अपितु पूरे परिवार की होती है। परिवार का आधार रक्त और यौन आधारित होता है। परिवार में कुछ व्यक्ति समूह के रूप में घर की एक ही छत के नीचे रहते हैं। ये

व्यक्ति वो होते हैं जो एक ही कुल के होते हैं। आम तौर पर इन व्यक्तियों में रक्त की साँझ होती है। इसके इलावा किसी भी एक कुल का व्यक्ति जब किसी दूसरे कुल की स्त्री से शादी करता है तो वो स्त्री भी उसी कुल ,उसी परिवार का हिस्सा बन जाती है। परिवार का ढांचा या तो एकल होता है या फिर संयुक्त। एकल परिवार में मातापिता - तथा उनकी संतान रहती है। संयुक्त परिवार में किसी व्यक्ति के न पिता साथ रहते हैं अपितु पिता के भाई और उनकी संतान -केवल माता भी साथ रहतीहै। यदि किसी व्यक्ति के संतान नहीं भी है तब भी पति-पत्नी दो लोगों का भी परिवार बन सकता है। परिवार के सदस्यों में दया आदि भावनाओं का होना जरूरी होता है। ,करुणा ,परस्पर स्नेह मजूमदार परिवार की इस व्यवस्था को परिभाषित करते हुए कहते हैं**परिवार उन व्यक्तियों क"‚ा एक समूह है जो एक ही छत के नीचे रहते हैं जो मूलतरक्त संबंधी सूत्रों से संबंधित रहते हैं तथा : हित और कृतज्ञता की अन्योन्याश्रिता के आधार पर जाति ,स्थान [2]"की जागरूकता रखते हैं।**

पारिवारिक इकाई में निवास का विशेष महत्व होता है। निवास के आधार पर ही कोई भी परिवार मातृ या पितृसत्तात्मक बनता है। शादी के बाद स्त्री यदि ससुराल में निवास करे तो वह परिवार पितृसत्तात्मक बन जाता है। यदि शादी के बाद पुरुष अपने ससुराल में निवास करे तो वह परिवार मातृसत्तात्मक बन जाता है। भारतीय पारिवारिक व्यवस्था में उत्तराधिकार तथा अधिकार के आधार पर परिवार का मुखिया निर्धारित होता है। आम तौर पर पिता ही परिवार का मुखिया होता है। उसकी मृत्यु के बाद बड़े पुत्र को परिवार का मुखिया बनाया जाता है। भारतीय समाज में परिवार संस्था प्राचीनकाल से पितृसत्तात्मक रही है। परिवार के महत्वपूर्ण फैसले लेने का अधिकार मुखिया के पास रहता है ।भावार्थ यही है कि परिवार का मुखिया पुरुष होता है तो सारी पारिवारिक शक्ति पुरुष प्रधान समाज के हाथों में रहती है। इसी प्रकार विवाह भी एक सामाजिक संस्था है। भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था की प्रणाली रही है जिससे जाति प्रथा विकसित हुई है। इसलिए यहाँ विवाह प्रणाली जाति आधारित रही है। समय के साथ परिवर्तन के चलते अन्तर्जातीय विवाह भी किए जाते रहे हैं। भारतीय समाज के संगठन संबंधी मेगस्थनीज का कथन है" ,**The people divided themselves into a number of occupationally specialized groups, that a person could marry only within his own group, and that no one could change affiliation from one group to another."** [3]भारतीय सामाजिक व्यवस्था को देखकर मेगस्थनीज इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि भारतीय जनता ने स्वयं को व्यवसाय के आधार पर कुछ समूहों में बाँट रखा है और ये समूह केवल अपने समूह के लोगों से ही शादी करते हैं और कोई भी व्यक्ति अपने समूह से बाहर जाकर शादी करने का विचार भी नहीं करता। लेकिन भारतीय जातियों का आधार व्यवसाय आधारित न होकर अब जन्म आधारित हो गया है।

एसहरनोट का संबंध पहाड़ी भौगोलिक क्षेत्र से रहा है। जहाँ .आर . वहीं उनकी कहानियों ,जीवन का चित्रण किया है-उन्होंने पहाड़ी जन ,में उस सामाजिक जीवन का चित्रण भी मिलता है जो न केवल पहाड़ी जीवन का है अपितु सामूहिक रूप से सभी मैदानी और पहाड़ी क्षेत्र के लोगों का है। इन्होंने जनधर्मी संवेदना को अपनी कहानियों में स्थान दिया है। जहाँ परंपरा और इतिहास का जिक्र मिलता हैवहीं इनकी , कहानियों में सामाजिक जीवन के अन्य विभिन्न पक्ष भी मिलते हैं।

एस सन 'दारोश तथा अन्य कहानियां' हरनोट का कहानी संग्रह.आर. इस ।में प्रकाशित हुआ एक अत्यंत महत्वपूर्ण कहानी संग्रह है 2001 बीस फुट ,ल्लियाँ बतियाती हैंबि -कहानी संग्रह की प्रमुख कहानियां हैं ,लाल होता दरख्त ,बच्छिया बोली है ,कागभाखा ,माफिया ,के बापू जी ,हिरखमिस्त्रीइन कहानियों में भारतीय ।दारोश तथा मुट्ठी में गाँव , ।सामाजिक जीवन की जीवंत झलक देखने को मिलती हैएस .आर . साथ -के साथ हरनोट की कहानियों में समाज के सकारात्मक पक्ष नकारात्मक पक्ष भी देखने को मिलते हैं। संयुक्त परिवार जो भारतीय समाज की एक विशेषता मानीजाती थी वह आज बिल्कुल ,लुप्त होने वाली है। प्राचीन समय में एकल परिवार का रुझान नहीं था, बल्कि सभी लोग संयुक्त परिवारों में रहना पसंद करते थे। इससे परिवार के सदस्यों में आपसी प्रेम बढ़ता था। लेकिन आज संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवार ने ले ली है। आज के समय में एकल परिवारों में भी संतुलन नहीं रहा। एकल परिवार भी टूट रहे हैं। टूटने के पीछे आज का पूंजीवादी युग है। आज लोग सिर्फ अपनी संपत्ति जमा करने में लगे हुए हैं। लोगों की मानसिकता भौतिकवादी हो गई है। भावनाएं पंख लगाकर उड़ गई हैं। एकल परिवार में मातापिता और संतान- ही तो होती है। आज की वीं 21सदी की संतान भी आधुनिकता के दौर में चकाचौंध हो गई है। माँबाप से आज की पीढ़ी को कोई लगाव नहीं - बिल्लियां ' संकलित कहानी में 'दारोश' रहा। हरनोट के कहानी संग्रह में यही समस्या दिखाई गई है। इस कहानी में अम्मा और 'बतियाती हैं पिता जीका लाड़ला बेटा अपनी जड़ों से कट जाता है। इसके पीछे शहरी संस्कृति का प्रभाव है। बच्चे को मातापिता पढ़ने के लिए शहर - खो जाते हैं। वे स्वयं को लेकिन बच्चे किसी और ही दुनिया में ,भेजते हैं इतना बड़ा समझने लगते हैं कि जीवन के महत्वपूर्ण फैसले वे बिना पिता को ब-माताताए खुद ही ले लेते हैं। **-बेटे को खूब पढ़ाया" इसे ,लिखाया। उसके पिता की जिद्द रहती कि एक ही बेटा है अफसर नहीं बनाया तो हमारा कमाना व्यर्थ है। हजारों कर्ज सर दो खेत रेहन पर रख लिए। कॉलेज पूरा हुआ -ले लिया। एक पर तो नौकरी भी लग गई। लेकिन उन बूढ़ों को यह भनक भी न लगी कि शहर के तौरतरीकों और चटक ने उसे उन दोनों से - बहुत दूर कर दिया है। उसका रिश्ता अपनी माटी से कटता गया। फासले बढ़ते चले गए और एक दिन जब उन दोनों को यह खबर मिली कि उसने शहर की किसी लड़की से ब्याह कर लिया तो बेचारे गांव में किसी को मूँह दिखाने लायक नहीं रहे।** [4]"इस प्रकार संतान अपने मातापिता से किस प्रकार दूर हो रही है। संतान स्वयं को - इतना काबिल और बड़ा समझने लगी है कि अपने जीवन केमहत्वपूर्ण निर्णय लेते समय माता पिता की सलाह भी नहीं-लेती है।

भारतीय संस्कृति में सामाजिक परिवेश के अंतर्गत जीवजंतुओं का - महत्वपूर्ण स्थान माना गया हैजंतु हमारे जीवन का विशिष्ट पक्ष -जीव । ।होते हैंवर्तमान समय में प्रकृति खतरे में है। प्रकृति में रहने वाले जीव-पक्षियों को एक लेखक के द्वारा -हैं। इन पशु पक्षी खतरे में-पशु ,जन्तु अपनी रचना में स्थान देना उनके प्रति अपने स्नेह तथा संवेदना को व्यक्त करना है। प्रत्यक्ष तौर पर भले ही लेखक इन पशुपक्षियों को - बचाने का प्रयत्न न करे लेकिन रचना में उनका जिक्र करना भी एक तरह से चिंतनऔर चिंता का प्रतीक है। लेखक ने अपनी कहानियों में इन पक्षियों का वर्णन करके न केवल इनके प्रति अपना स्नेह व्यक्त किया है अपितु इन पक्षियों के माध्यम से पुराने बुजुर्गों की मान्यताएँ भी स्थापित की हैं। इनकी कहानियों के लोग पशुपक्षियों को धर्म के साथ - पक्षियों से -कहानी में दादी को पशु 'कागभाखा' जोड़कर देखते हैं। बार कौए को मारने से -बड़ा स्नेह है। दादी अपनी बहु को भी बार रोकती है और पक्षियों की सेवा को धर्म समझती है। **पगशी !बहू" किसी का बुरा नहीं करते। तू बजाए पत्थर मारने के इसे टुकड़ा [5]"!पुत्र ,फेंका कर। पुत्र होगा बेटा**बुजुर्ग लोगों की पशुपक्षियों के - साथ विशेष सहानुभूतिहोती है। वर्तमान समय में लोग जीवजंतुओं - को मारने मेंपीछे नहीं हटते लेकिन पुरानी पीढ़ी के लोग इन पक्षियों को पूजते रहे हैं। उनके अपने धार्मिक विश्वास रहे हैं। पशुपक्षियों को - काम समझते रहे हैं। पानी देने को वे लोग पुण्य का-दाना

समाज में बुजुर्गों को देखा जाए तो उनका रहनपान आज -खान ,सहन- से बहुत अलगरहा है। इसी प्रकार उनके रीतिरिवाज- भी विशिष्ट थे। पुराने बुजुर्गों की मानसिक समझ इतनी सक्षम थी कि वे पशुपक्षियों - बुरा घटित होने का -की भाषा को भी समझ लेते थे। उसी से वे अच्छा कहानी में दादी कौए की भाषा 'कागभाखा' अंदाजा लगा लेते थे। **कौन जाने दादी"** समझने में माहिर है। **को कौए की भाषा किसने पढ़ाई होगी। पर दादी को इस बात में महारत हासिल थी। वह कभीकौआ पूरे गांव और परगने की खबर -कभार बोला करती- पहचान इसे होती है। कोई इसकी बोली बुरे की-रखता है। अच्छे समझे तो विपत्ति आने से पहले ही टल जाए। पर ऐसा समझना सभी के बस की बात न थी। लोगों के लिए यह कोर मजाक था। लेकिन जब कभी दादी किसी अनहोनी या अच्छेबुरे की खबर - [6]"पहले दे देती तो लोग हैरान हो जाते।**आज भी हमारे घरों के बड़े बुजुर्ग समय आदि का अंदाजा घड़ी देख कर नहीं धूपछाया देख कर - लगा लेते हैं। वे जानवरों की आवाजों से शुभ अशुभ का अंदाजा लगा- लेते हैं।

लोगों में धर्म की जितनी आस्था होती हैउतना ही अंधविश्वासों का भी , प्रभाव होता है। इस अंधविश्वास के तहत कई बार लोग ऐसे निर्णय ले लेते हैं जिससे मनुष्य का नुकसान होता है। कहानी 'लाल होता दरख्त' में हरनोट ने उस अंधविश्वास की ओर इशारा किया है, जहाँ एक लड़की की शादी से ज्यादा जरूरी एक वृक्ष की शादी समझी जाती है। पहाड़ी संस्कृति में ब्राह्मणों द्वारा पीपल वृक्ष का विवाह किया जाता है। किसी अन्य जाति के खेत में भी पीपल का वृक्ष पैदा हो जाता है तो वे भी पीपल का विवाह नामक मादा फूल की बेल से करते हैं और 'सूणी' इस बेल को पीपल के तने के साथ जमीन में लगा दिया जाता है। मुन्नी के पिता मथरू के शब्दों के माध्यम से कहानीकार ने इस प्रथा के प्रति लोगों के अंध**तेरा दिमाग तो टकाणे नी है "** विश्वास को दिखाया है।-

लाड़ी। तेरे को क्यःा पता कि शास्त्र क्या चीज है। गांवपरगणे में - [7]"है कोई इतना भाग वाला जिसकी खेती में पीपल जमया हो। इस कहानी में मुन्नी की माँ जब पीपल से ज्यादा मुन्नी की शादी को जरूरी समझती है तो मुन्नी का पिता मथरू अंधविश्वास के मारे अपनी बेटी की शादी से ज्यादा जरूरी पीपल की शादी को समझता है और अपनी बात को सही साबित करने के लिए शास्त्रों का हवाला भी देता है।

हरनोट की कहानियों में समाज में होने वाले स्त्री शोषण का-चित्रण मिलता है। स्त्री की सामाजिक अस्मिता की बात की जाए तो स्त्री की अस्मिता का प्रश्न समाज,संस्कृति ,परिवार , राजनीतिधर्म और , पारिवारिक संरचनाओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। कुछ स्त्री पात्र जैसे राधा के आधार ,सीतापर स्त्री की भूमिका को समाज ने आदर्श ,त्याग , समर्पण तक सीमित कर दिया है। लेकिन जब से स्त्री ने अपनी तब से स्त्री मात्र भ ,अस्मिता को पहचानना शुरू किया हैोगआदर्श , और समर्पण की वस्तु बनकरनहीं रह गई है। हिन्दी साहित्य में अधिकांश उदाहरण मिलते हैं, जहां स्त्रियाँ अपने लिए आवाज उठाती नजर आती हैं। स्त्री का अपना आंतरिक एवं बाह्य संघर्ष हैदुख है , जिनकी अभिव्यक्ति जरूरी है और इस उद्देश्य को स्त्री विमर्श ने किसी हद तक सार्थकता प्रदान भी की है। पितृसत्ता,यौन ,हिंसा , अर्थ न जाने कितने आधार हैं जो स्त्री अस्मिता के रास्ते में लंबे समय से बाधा उत्पन्न करते आ रहे हैं। **सिमोन द बोउवा** की पुस्तक **द सेकंड ' 'सेक्स** की अनुवादक मोनिका सिंह लिखती हैं**परिवार को कायम " , और विरासत को अक्षुण्ण रखने की प्रबल इच्छा ही स्त्रियों के उत्पीड़न का कारण बनती है इसलिए अगर वह परिवार के चंगुल से बच जाएअगर ;तब वह इस पूर्ण निर्भरता से भी बच जाती है , ,परिवार के निजी संपत्ति रखने पर समाज प्रतिबंध लगा देता है स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार होता है।** [8]"स्त्री की सामाजिक अस्मिता में परिवार तत्व को बाधक के रूप में दिखाया गया है। हरनोट की कहानी में दारोश नामक ऐसी परंपरा दिखाई गई 'दारोश' है जो लड़की के शोषण के लिए जिम्मेदार है। पहाड़ी संस्कृति में जनजातीय समूहों में यह प्रथा मौजूद है और इसके अनुसार किसी भी लड़की से कोई भी जबरन उठा कर विवाह कर सकता है। लोग इस चीज का विरोध नहीं करते अपितु वो उठाने वाले के साथ लड़की की शादी कर देते हैं, चाहे उठाने वाले ने लड़की के साथ कितना भी बड़ा दुष्कर्म क्यों न किया हो। दारोश कहानी में कानम की बहन भी इसी प्रथा का शिकार होती है। किसी स्त्री की मर्जी के विरुद्ध उससे जबरदस्ती सहवास करना बलात्कार ही है। कानम की माँ द्वारा इस प्रथा का विरोध करना और उसके पिता द्वारा इस घटना को बलात्कार न समझकर एक प्रथा समझना अपनेआप में एक प्रश्नसूचक चित्रण - है। पाठक एक बार के लिए यह सोचने पर बाध्य हो जाता है कि क्या वास्तव में ऐसा हो सकता है कि एक लड़की का यौनशोषण हो जाए - और उसका पिता उसे अन्याय समझने की बजाए उसे एक प्रथाकह कर सब सहन कर ले। कानम के पिता के यह शब्द इस प्रथा को प्रोत्साहित करते दिखाई देते हैं**यह मैटर बलात्कार का नहीं है " , सुमी। इट इज अ लांग ट्रेडीशन [9]"।....**ऐसे शोषण को या तो वह स्त्री समझ सकती है जिसके साथ घटित हुआ हो या फिर किसी अन्य स्त्री के मन में भी सहानुभूति हो सकती है और यह सहानुभूति एक पुरुष से कहीं ज्यादा स्त्री के मन में होती है। जैसे कि कानम की माँ इस घटना से बहुत आहत होती है लेकिन उसके पिता में कहीं भी वो हमदर्दी दिखाई नहीं देती।

आज समाज की दशा इतनी खराब हो गई है कि किसी को लज्जाशर्म , भी नहीं रही। एक गांव का पुरुष अपने ही गांव की स्त्री से संबंध बनाने के लिए आतुर है भले ही वो स्त्री विवाहित हो या अविवाहित। कोई समय ऐसा था कि गांव की औरत की इज्ज़त पूरे गांव की इज्ज़त होती थी। लेकिन आज गांव के लोग ही उस इज्ज़त के साथ खेलते हुए नजर आते हैं। मनुष्य से समझदार तो जानवर होते हैं जिनमें एकदूसरे के - साथ रिश्ते को समझने की शक्ति होती है। मनुष्य पर कामुक भावना इतनी हावी हो गई है कि वो रिश्तों की मर्यादा भी भूल गया है। कहानी में करमू नामक पात्र अपने ही गांव की बहू 'बच्छिया बोली है' पर गंदी नजर रखता है। दूसरी ओर बच्छिया है जिसके पास बैल छोड़ने पर भी बच्छिया नहीं बोलती क्योंकि वो बच्छिया उसी गाय की है जिसका बैल है। तभीबैल लेकर आने वाले करमू की नीयत पर कहानी में व्यंग्य करते हुए बहू कहती है**बच्छिया का कसूर नहीं है " , संबंध -बेड़ में भी कुछ साक-सास जी। बैल समझता है कि गांव [10]"होते हैं। इसे भी अपने पराए की पहचान है।**

इसके साथ ही पति परंपरा भी हमारे समाज का हिस्सा रही है।-बहु , कहानी में कान 'दारोश'म की माँ सुमी तीन भाइयों की पत्नी थी। यदि एक पुरुष के लिए एक से ज्यादा पत्नियाँ रखने का विरोध समाज करता है तो एक स्त्री को एक से अधिक पुरुषों में बाँट देना भी ठीक नहीं है।

हरनोट ने सामाजिक जीवन के जिन विभिन्न पक्षों को दिखाया है उसमें दलित लोगों का सामाजिक जीवन भी शामिल है। शब्द को 'दलित' .परिभाषित करते हुए डॉ पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी लिखते हैं**दलित शब्द " , दलित शब्द में छिपा ,अपने आप में बेहद व्यापक अर्थ रखता है वह एक पहचान है ,हुआ गूढ़ अर्थ जिस भाव की व्याख्या करता है कुचल-उन लोगों की जिन्होंने सदियों से दबेे प्रताड़ित ,उपेक्षित , 'स्याहा' तिरस्कृत रहकर इस देश के निर्माण में अपना जीवन गिर्द बिखरे स्वार्थी तत्वों ने -किन्तु सत्ता और उसके इर्द ,किया है उन्हें कभी स्वीकार नहीं किया। इसमें सम्पूर्ण महिला समुदाय को [11]"भी दलित ही माना गया है।**

समाज में जिस वर्ग को दलित वर्ग माना जाता है, उसमें निम्न जातियों के लोग शामिल होते हैं।दलित कहे जाने वाले लोगों ने समाज के उच्च वर्ग के हाथों हर प्रकार की यातना सही है। कभी स्वर्णों द्वारा दलित कहे जाने वाले लोगों को कुएं से पानी न भरने देनाकभी दलितों का , ,शमशान घर अलग बना देनादलितों द्वारा छुए गए बर्तनों को स्वर्णों द्वारा न छूनामूत्र ढोने के लिए तथा मरे हुए जानवरों को ढोने का -मल , काम इनसे करवाए जाते रहे हैं। ऐसे ही और कितने उदाहरण हमारे समाज में दिखते हैं। हरनोट की कहानियों में दलित वर्ग के साथ होने वाली जबरदस्ती देखने को मिलती है। कहानी में 'लाल होता दरख्त' ब्राह्मणों के द्वारा चमार जाति के लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। इस कहानी का पात्र मथरू जाति के आधार पर होने वाले भेदभाव **साथ बाहर की बिरादरी -बामणों के साथ"** का शिकार है। **पहल बराबर इज्जत मंद-विशेषकर चमारों को भी पहलेि में दी जाती थी। परंतु अब वह बात नहीं है। हरिजनों का मंदिर के भीतर जाना बंद है।** [12]"हरिजन कही जाने वाली जाति पर धार्मिक प्रतिबंध भी व्यवस्था लगाती रही है। धार्मिक स्थलों पर प्रवेश के लिए निम्न कहे जाने वाले लोगों को रोका जाता रहा है।

भारतीय समाज का ढांचा ऐसा है कि परिवार द्वारा बचपन से ही बच्चे के दिलोदिमाग में ऐसी चीजें पैदा कर दी जाती हैं जो समाज में - समानता के रास्ते में बाधक बन जाती हैं। खलील जिबरान की एक [13]"**पर अपने विचार मत दो। ,बच्चों को सब कुछ दो"** ,पंक्ति है हरनोट की कहानी में तीन जातियाँ ह 'हिरख'ैं ,एक ब्राह्मणों की - दूसरी हरिजनों की और तीसरी बाहर से आये हुए मुसलमानों की। उसके पिता उसकी ,किशनू आठवीं कक्षा में पढ़ने वाला एक बच्चा है मानसिकता में जाति का जहर भरने की कोशिश करते रहते हैं। उसे अपनी जाति से बाहर की निम्न जातियों के प्रति घृणा करना सिखाते हैं। **जब वह अपने पिता के पास रहता तो वहाँ उसे इस बिरादरी से " दूर रहने की अवश्य सलाह दी जाती। कोई अगर उनके घर आता और उसे चाय या पानी पिलाना पड़ता तो उसके लिए अलग बर्तन होते। उन्हें कभी भीतर नहीं लाया जाता। उन्हें रोटी भी दरवाजे के [14]"पास कुत्तों की तरह दी जाती।**किशनू ही नहींअन्य बहुत सारे , बच्चे ऐसी मानसिकता के शिकार हैं। बच्चे जन्म से ही ऐसे दकियानूसी विचारों को अपने साथ लेकर पैदा नहीं होते। उनको ऐसे विचार पिता द्वारा दिए जाते हैं। यहाँ पर बच्चे के -संस्कारगत रूप में माता प-तापास अपनी मानसिकता नहीं होती बल्कि माािता द्वारा थोपी गई मानसिकता होती है।

पूंजीवादी व्यवस्था जो आज भारतीय समाज का हिस्सा बन चुकी है ,के प्रति हरनोट की रचनाओं में चिंता देखी जा सकती है। आज की स्थिति यह है कि धन का संग्रह एक ही जगह हो रहा है। अमीर और अमीर तथा गरीब और गरीब होता जा रहा है। कार्ल मार्क्स ने जो साम्यवाद स्थापित करने की कोशिश की थीवह आज असफल दिखाई दे रहा , है। पूंजीपति वर्ग गरीबों का शोषण करता है। उत्पादन में सबसे ,अधिक योगदान मजदूरों का होता है लेकिन उन्हें मुनाफ़े की तुलना में बहुत कम दिया जाता है। प्रेमचंद कहते हैं**कर जीनिर्धन रह",ना मरने से भी बदतर है।** [15]"प्रस्तुत कहानी संग्रह में कहानी में 'मिस्त्री' पाँच मिनट में पत्थर उखाड़ने के लिए मिस्त्री के सामने एक ऐसी शर्त **ठहरो "** ,रखी जाती है जो शोषण को दिखाती है। चौधरी कहता है **पाँच से एक ऊपर हुआ न तो पूरे महीने की ध्याडी गोल ,मिस्त्री [16]"समझो।**

गरीब व्यक्ति को कर्ज का सामना हमेशा से करना पड़ा है। एक बार लिया गया कर्ज सिर पर एक ऐसा बोझ बन जाता है जो कभी भी उतरने का नाम नहीं लेता। इस कर्ज पर ऊपर से ब्याज बढ़ता जाता है। यह कर्ज कई बार तो ऐसा विकराल रूप धारण कर लेता है कि व्यक्ति की जान तक ले लेता है। प्रेमचंद द्वारा लिखित उपन्यास

में मुख्य पात्र होरी भी इसी कर्ज की लपेट में आ जाता है और 'गोदान' एक दिन ऐसा आता है कि इस कर्ज का तनाव उसे मौत के मूँह में भेज देता है। कर्ज में व्यक्ति की स्थिति ऐसी हो जाती है कि उसे कर्ज देने वालों की ज़िंदगी भर गुलामीकरनी पड़ती है। उपन्यास में 'गोदान' होरी जब रायसाहब को सलाम करके लौट कर घर आता है तो अपने पुत्र गोबर के विद्रोह का जवाब इस प्रकार देता है जिससे निम्न कहे **,सलामी करने न जाएं"** जाने वाले वर्ग की मजबूरी साफ झलकती है। **,भगवान ने जब गुलाम बना दिया है ?तो रहें कहाँतो अपना क्या बस है**[17]**"?**यह समस्या केवल होरी की नहीं हैआज समाज में यह , में 'मिस्त्री' समस्या आम देखने को मिलती है। हरनोट की कहानी ,चौधरी साहब है जो गरीबों को कर्ज देता है। इसी कहानी में से एक उदाहरण**लोग आज तक कहते हैं कि चौधरी ने गरीबों का मांस ", खाकर इतन-खाी जमीन जायदाद जोड़ी है। जिसको कर्ज दिया , वह ब्याज सहित इतना हो गया कि वह लौटा न सका तो खेत देने**[18]**"पड़े।**

अब अंत में यह कहना समीचीन प्रतीत होता है कि एसहरनोट .आर . ने अपनी कहानियों में सामाजिक जीवन को बड़ी ही संजीदगी के साथ प्रस्तुत किया है। उन्होंने सामाजिक जीवन के हर पक्ष को अपनी कहानियों में स्थान दिया है। विवाह प्रथासमाज में मौजूद जातिगत , ,पूंजीवादी व्यवस्था ,आर्थिक संघर्ष ,विश्वास-धार्मिक अंध ,भेदभाव पहाड़ी संस्कृति तथा दलित जीवन का निष्पक्ष चित्रण किया है। कहीं पर भी कोई पक्षपात नजर नहीं आता। कहीं किसी भी कहानी में यह नहीं लगता कि कहानीकार किसी एक वर्ग की बात कर रहा है या किसी एक वर्ग को विशेष महत्व दे रहा है। समाज के जीवन की जो वास्तविकता हैपास अपने -जो यथार्थ कहानीकार ने अपने आस-जो , उनको ज्यों का त्यों प्रस्त ,जीवन में देखे हैंुत किया है। एस .आर . की कहानियों में जो सामाजिक जीवन हरनोटकी प्रस्तुति में कल्पना या अतिशयोक्ति नजर नहीं आती है। पर्वतीय अंचल के प्रत्येक पक्ष को हरनोट ने चित्रित किया है और इन पक्षों को शोध की दृष्टि से विश्लेषित करने पर अनेक नवीन बिन्दुओं का उद्घाटन प्रकट होता हैअतः । का सामाजिक 'दारोश तथा अन्य कहानियां' हरनोट के कहानी संग्रह जीवन के चित्रण करने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज के रूप में ।प्रयोग किया जा सकता है

सन्दर्भ

1. सिंह :गुरदयाल सिंह और नागार्जुन के उपन्यास .कुलवंत , .सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में सतलुज प्रकाशन ,हरियाणा , 20-पृष्ठ संख्या ,2009-प्रथम संस्करण
2. श्रीवास्तव ,रघुवीर .भारतीय लोक.संस्कृति और साहित्य- रोहित पब्लिकेशन्स,2013 संस्करण ,नई दिल्ली , पृष्ठ संख्या 74-
3. Mandelbaum, David G. Society in India, Sage Publications, California, page-5
4. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , -पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन12-13
5. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 53-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
6. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , ,प्रकाशनपंचकूला53-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,
7. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 75-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
8. सिंहवाणी .सिमोन द बोव्आर द सेकंड सेक्स .मोनिका , -121 -पृष्ठ संख्या ,2024-प्रथम संस्करण ,नयी दिल्ली ,प्रकाशन 122
9. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 107-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
10. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 68-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
11. उद्दीन ,दलित चेतना और भारतीय समाज .मौहम्मद अबीर , अंकितपब्लिकेशन्सपृष्ठ ,2011-प्रथम संस्करण ,दिल्ली , 17 -संख्या
12. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 73-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
13. अश्क ,इलाहाबाद ,नीलाभ प्रकाशन .अंजो दीदी .उपेन्द्रनाथ , 17-पृष्ठ संख्या ,2023-संस्करण
14. हरनोटआ .एस ,रआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ . 88-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
15. गौतमदिव्यम् .मुक्तिबोध ,प्रसाद ,मार्क्स प्रेमचंद .सुरेश , 187 -पृष्ठ संख्या ,2012-संस्करण ,दिल्ली ,प्रकाशन
16. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 105-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन
17. प्रेमचंदपृष्ठ ,2013-संस्करण ,दिल्ली ,अनन्य प्रकाशन .गोदान . -संख्या
18. हरनोटआधार .दारोश तथा अन्य कहानियाँ .आर .एस , 99-पृष्ठ संख्या ,2023-प्रथम संस्करण ,पंचकूला ,प्रकाशन